महामहिम राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का बरकतउल्ला विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में उद्बोधन

स्थान :- भोपाल दिनांक:- 5 जनवरी, 2013 समय :- प्रात: 11 बजे

आज बरकतउल्ला विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में उपस्थित होकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। उपाधि पाने वाले समस्त विद्यार्थियों के लिए आज का यह समारोह अत्यंत महत्वपूर्ण एवं अविस्मरणीय है। उनके भावी जीवन के सपनों को साकार करने का यह एक सुनहरा अवसर है। आज का यह पल उनके स्वर्णिम भविष्य का संकेत है। अत: इस शुभ अवसर पर मैं सभी विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देता हूं एवं उज्जवल भविष्य की कामना करता हूं।

मेरा मानना है कि शिक्षा हमारी अंतर्निहित शक्ति को उभार कर ज्ञान में परिवर्तित करती है। शिक्षा हमें बौद्धिक रूप से सक्षम एवं तकनीकी रूप से कुशल बनाती है। ज्ञान के साथ-साथ विद्यार्थियों में मानवीय मूल्यों का भी विकास होना चाहिए। इसके बिना शिक्षा अधूरी होती है। बिना मूल्य के शिक्षा उस फूल के समान है, जिसमें कोई सुगंध नहीं होती है। युवाओं को उन मूल्यों को आत्मसात करना चाहिए जो उन्हें अपने समाज एवं परिवेश के प्रति संवेदनशील बनाये रखने में मददगार हो, जिससे हमारे अंतर्निहित व्यक्तित्व का विकास हो सके। हमारे अज्ञानता रूपी अन्धकार को दूर कर हमें उजाले की ओर गतिशील बना सके। इसलिए उपनिषद में कहा गया है “तमसो मा ज्योतिर्गमय” अर्थात “मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो”।

आज बदलते परिदृश्य में विज्ञान एवं तकनीक ने समाज को बहुत प्रभावित किया है। इसलिए हमारे विश्वविद्यालयों को इस चुनौती का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। समाज में जैसे-जैसे बदलाव आते हैं हमें उस बदलाव के प्रति सजग रहना चाहिए। शिक्षा के बदलते परिदृश्य में नवाचार को समाहित करना चाहिए। हमारी शिक्षा व्यवस्था में स्थानीय मांग एवं आवश्यकता के अनुरूप माडल विकसित करना चाहिए। शिक्षा वस्तुत: जीवन के सर्वांगीण विकास की व्याख्या करती है। इसलिए जीवन के साथ शिक्षा का तादात्म्य स्थापित होना जरूरी है।

हमारी प्राचीन परम्परा में शिक्षा को मुक्ति का मार्ग माना गया है- “सा विद्या या विमुक्तये”। शिक्षा ने सदैव मनुष्य की श्रेष्ठता और समाज की तथा देश की उन्नति के मार्ग प्रशस्त किये हैं।

आज शिक्षा के स्वरूप में बदलाव का अनुभव किया जा रहा है, शिक्षा को रोजगार से जोड़ा जा रहा है, जिससे कहीं न कहीं विद्यार्थियों में सम्यक रूप से उत्तरदायित्व का विकास नहीं हो पा रहा है। संभवत: यह शिक्षा का अधूरायन है। रोजगार के साथ-साथ उत्तम नागरिक

बनाना भी शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। आज भूमण्डलीकरण की बढ़ती लोकप्रियता एवं उदारीकरण के कारण हमारे युवाओं में एक नयी सोच एवं जीवन शैली विकसित हुई है। यह सोच भारतीय परंपरा एवं संस्कृति से थोड़ी अलग दिखती है। हमारे यहां 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की परम्परा रही है, जो धर्म या सदाचार केन्द्रित है। आज वैश्वीकरण या भूमण्डलीकरण अर्थ-केन्द्रित है। हमारी परम्परा ने जहां विश्व को कुटुम्ब माना है, वहीं आज भूमण्डलीकरण बाजार कानाम दे रहा है। समाज में हो रहे इस बदलाव को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। अत: संदर्भ के आधार पर शिक्षा के बदलते परिदृश्य का विश्लेषण किया जाना आवश्यकता है। परन्तु अपनी परंपरा के मूल्यांकन किये बिना हमें अन्धानुकरण नहीं करना चाहिए। पण्डित नेहरू ने कहा था :-

""A University stands for humanism, for tolerance,for progress,for adventure of ideas and for the search of truth".

आज विद्यार्थियों में विनम्रता एवं सहिष्णुता का अभाव है। "विद्या ददाति विनयम्" को हम भूलते जा रहे हैं। "सर्वे भवन्तु सुखिन:" अब हमें याद नहीं है। हम स्व-केन्द्रित होते जा रहे हैं। इसलिए आज विश्वविद्यालयों को पण्डित नेहरू की बात को याद करना चाहिए।

भारत की अपनी संस्कृति एवं परंपरा के कारण विश्व में एक अलग पहचान है। उसे विश्व गुरू कहा जाता रहा है। परन्तु आज समाज में जो घटनाएं घट रही हैं, युवा जिस तरह दिग्भ्रमित हो रहा है, क्या इससे हम अपनी पहचान बनाये रखने में समर्थ होंगे?

निश्चत ही शिक्षा के क्षेत्र में हम उन्नति कर रहे हैं, हमारी साक्षरता दर बढ़ रही हैं, परन्तु गुणवत्ता में हम कहीं न कहीं अभी भी पीछे हैं। हमारे अंदर की पशुता हमें पीछे की ओर धकेल रही है। इसलिए आज समाज में हर तरह की विसंगतियां पैदा हो रही हैं।

हमारे देश की प्रतिभाएं विदेशों की तरफ अग्रसर हो रही हैं, परन्तु उन्हें बेहतर वातावरण एवं अवसर उपलब्ध कराकर देश की प्रगति में उनके योगदान का उपयोग किया जा सकता है।

शिक्षा में हमारी छात्राओं की सहभागिता तेजी से बढ़ रही है, यह एक सकारात्मक बदलाव है। शिक्षा के माध्यम से वे अधिक सशक्त हो रही हैं। अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो रही हैं तथा अपने उत्तरदायित्व को पूरा कर रही है- यह एक सुखद अनुभूति है।

मेरा यह मानना है कि शिक्षा ग्रहण करते समय कभी गलतियों से डरकर भागना नहीं चाहिए। गलतियों से ही मनुष्य सीखता है। जैसे शिशु गिरते-गिरते चलना सीखता है। गलतियों का मुकाबला करना चाहिए। इसलिए कहा गया है-

उठकर चले

चलकर गिरे

गिरकर उठे

उठकर चले

मुझे खुशी है कि इस विश्वविद्यालय का नामकरण प्रसिद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी तथा भोपाल की माटी के सपूत प्रोफेसर बरकतउल्ला भोपाली के नाम पर किया गया है, जिन्होंने विदेश में रहकर अपने देश की आजादी के लिए अथक प्रयास किये थे। हम अपने देश में रहकर भी अगर अपने देश के बारे में नहीं सोचते हैं तो यह चिंता की बात है। हमें उस महान व्यक्तित्व से देशप्रेम, कर्तव्यनिष्ठा एवं समर्पण भाव को सीखना चाहिए तथा उनका अनुकरण करने का प्रयास करना चाहिए।

समय-समय पर बैठकों के दौरान बरकतउल्ला विश्वविद्यालय की अकादमिक उपलब्धियों के बारे में जानकर प्रसन्नता होती है। कई क्षेत्रों में विश्वविद्यालय ने नई ऊंचाईयों को छुआ है। राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्वविद्यालय की एक नयी पहचान बनी है। परन्तु इसे और आगे ले जाना आज आप सभी विद्यार्थियों का दायित्व है। आज उपाधि ग्रहण करते समय हमारे विद्यार्थियों को अपने सामाजिक एवं अकादमिक उत्तरदायित्व को भलीभांति निभाने का संकल्प लेना होगा।

अंत में मैं आप सभी विद्यार्थियों को बधाई देता हूं, अपनी शुभकमनाएं देता हूं, जो आज इस दीक्षान्त समारोह में उपाधि ग्रहण कर रहे हैं- इस विश्वास के साथ कि आज अपने कर्तव्य बोध को भलीभांति समझेंगे एवं तदनुरूप अपना दायित्व निभायेंगे। एक अच्छा नागरिक बनकर इस विश्वविद्यालय तथा देश का नाम रोशन करेंगे।

जय हिन्द।